International Research Journal of Human Resource and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor 5.414 Volume 5, Issue 11, November 2018
Website- www.aarf.asia, **Email** :, editoraarf@gmail.com

आकाशवाणी और संगीत का अन्तः सम्बन्ध

डॉ. संगीता गोरंग
एसोसियेट प्रोफेसर
संगीत विभागाध्यक्षा
के.वी.ए. डी.ए.वी. कॉलेज फार वूमन,
करनाल

सारांश

संगीत जीवन की आधारभूत आवश्यकता है। समाज के किसी भी व्यक्ति अथवा वर्ग का संगीत के विभिन्न स्रोतों के प्रति अपना रूझान हो सकता हे परंतु यह सत्य है कि बिना संगीत मानव जीवन की कल्पना करना मुश्किल ही नहीं नामुमकिन है। संगीत को श्रोताओं तक पहुँचाने का सबसे पहला एवं सबसे सरल माध्यम बना आकाशवाणी। कई दशकों तक जब तक कि टेपरिकार्डर, टेलिविजन इत्यादि अन्य माध्यमों की पहुँच आम जनता तक नहीं हुई तब तक आकाशवाणी ही संगीत को श्रोताओं तक पहुँचाने का सशक्त माध्यम रहा। आज के परिवेश में भी आकाशवाणी अलग-अलग रूपों जैसे कि एफ.एम. रेडियो आदि के जरिए आम जनमानस पर अपनी पकड़ बनाये रखने में सफल है और श्रोताओं को संगीत पहँचाने का सशक्त माध्यम है।

प्रस्तावना

बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध को वैज्ञानिक क्रांति के अभ्युदय का समय कहा जा सकता है, जहाँ वैज्ञानिक अविष्कारों के अंतर्गत कुछ ऐसे उपकरणों का अविष्कार हुआ जिन्होंने संगीत के प्रचार-प्रसार को तीव्रता प्रदान की। संचार साधनों के प्रारंभिक दौर में संगीत के क्षेत्र में एक वैज्ञानिक अविष्कार का विशेष महत्त्व है, जिसने भारतीय संगीत के क्षेत्र में ही नहीं वरन् विश्व में क्रांति ला दी यह था रेडियो का आगमन। भारत में इसकी स्थापना सन् 1627 ई. में हुई। सन् 1636 ई. में इंडियन स्टेट ब्रॉडकास्टिंग सेवा का नाम बदलकर आकाशवाणी कर दिया गया।

उस समय आकाशवाणी एक सशक्त माध्यम था शास्त्रीय संगीत को जन-जन तक पहुँचाने के लिये। यद्यपि प्रसारण सुनने में साफ न था किन्तु रसिक श्रोताओं को घर मे ही बैठकर सुनने का एक साधन मिल गया था जोकि किसी चमत्कार से कम न था साथ ही कम समय में परंपरागत शुद्धता के साथ आलापतान और बंदिशों को अपने सम्पूर्ण असरदारी के साथ प्रस्तुत करने के प्रयासों ने आकाशवाणी को एक सशक्त संचार साधन के रूप में स्थापित करके प्रतिष्ठित किया।

© Associated Asia Research Foundation (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

घरानेदान कलाकारों को उनके उस्ताद अन्य घरानों की गायकी से दूर रखते थे। ताकि उनकी अपनी घरानेदार गायकी को न दूसरे घराने वाले सुन सके और न उनकी छाप उनकी अपनी गायकी पर पड़े। इन कलाकारों को अपनी सीमाओं से बाहर निकालने का महत्त्वपूर्ण कार्य आकाशवाणी ने किया। यूँ तो घराने वस्तुतः एक प्रकार के औपचारिक संगीत शिक्षा के केंद्र थे साथ ही घरानों की संगीत शिक्षा पूर्णरूपेण व्यक्तिगत एवं गुरु की इच्छानुसार ही होती थी परन्तु आकाशवाणी तथा प्रसिद्ध गायकों-वादकों के रिकार्डो के बनने के कारण शास्त्रीय संगीत घरानों के सीमित दायरों से निकलकर इन संचार साधनों के माध्यम से सर्वसाधारण को सुलभ होने लगा।

सन् 1636 ई. से 1644 ई. के कालखण्ड में आकाशवाणी का माध्यम ही अपनी नवीनता के बहार पर था। संगीत की दृष्टि से इस कालखण्ड में दर्जे दार गायक उन्नति के शिखर पर विराजमान थे। तब आकाशवाणी के केन्द्रों की संख्या बहुत अल्प थी।

इन चुने हुए केन्द्रों से संगीत के कार्यक्रम प्रक्षेपित होने से देश के अनेक श्रेष्ठ संगीतकार यहाँ आमंत्रित किये जाते और कार्यक्रम का स्तर उच्च ही रहता था। घरानेदार कलाकारों ने इस माध्यम द्वारा अपनी गायकी को दूर-दूर तक जन-जन तक पहुँचाया। भारत में संगीतकारों को सबसे पहले आकाशवाणी ने ही मंच प्रदान किया। कलाकारों में शास्त्रीय संगीत, सुगम संगीत तथा लोक संगीत के अनुसार वर्ग विभाजन करके उनका ध्वनि-परीक्षण (Audition) किया गया और उनकी श्रेणियाँ निर्धारित करके कार्यक्रम देने के लिए आमंत्रित किया गया। इससे सरकार को अपनी नीतियाँ प्रचारित करने का लाभ तो मिला ही, जनता को मनोरंजन का एक बड़ा माध्यम प्राप्त हुआ और कलाकारों में कला के प्रति उत्साह जागृत हुआ। बाद में आकाशवाणी का विस्तार हुआ तो क्षेत्रीय कलाकारों के लिए भी कला-प्रदर्शन के द्वार खुल गए। इसके बाद अखिल भारतीय संगीत कार्यक्रम, वाद्यवृन्द, चित्रपट संगीत, गीत-नाट्य तथा ऑडीटोरियम में श्रोताओं की उपस्थिति में आयोजित कार्यक्रमों के समावे-ा से आका-ावाणी की लोकप्रियता बढ़ती चली गई और संगीत-कला को प्रोत्साहन मिलता रहा।

जनजीवन में सांस्कृतिक उत्थान की चेतना जागृत होने से संगीत, साहित्य तथा अन्य कलाओं का चतुर्दिक विकास हुआ। इसी समय दूरदर्शन (Televison) का आविर्भाव हुआ। जो कलाकार केवल कानों से सुने जाते थे वे अब प्रत्यक्ष भी दिखाई पड़ने लगे। गायन-वादन के अतिरिक्त नृत्यकला के कलाकार भी इससे जुड़ गए। संगीत-कार्यक्रमों के अलावा संगीत और नृत्य के पाठ, संगीत पत्रिका, संगीत-परिसग्वाद, संगीत-प्रतियोगिता, पाश्चात्य संगीत, राष्ट्रीय वाद्यवृन्द, वृन्दगान, चित्रपट-संगीत तथा प्रवासी भारतीयों के लिए विविधरंगी अनेक कार्यक्रम श्रोता और दर्शकों का मन मोहने लगे। दूरदर्शन पर महान् संगीतकारों से सम्बन्धित वृत्तचित्र और 'सीरियल्स' भी दिखाए जाने लगे।

आज आकाशवाणी के प्रसारण केन्द्र और दूरदर्शन के अनेक केन्द्र भारतीय जन जीवन को ऐसा मनोरंजन प्रदान कर रहे हैं जिसकी कल्पना भरत और शार्ङ्देव को भी शायद नहीं रही होगी। आवश्यकता इसी बात की है कि संगीतकार अपनी साधना को संकीर्णता और अपरिपक्वता की सीमा से निकालकर उसे एक रिझाने वाली कला का स्वरूप प्रदान करें ताकि भारतीय संस्कृति को संगीत के स्वर्ण-मुकुट से अलंकृत किया जा सके। नाट्य-संगीत शास्त्रीय

संगीत की समस्त विशेषताओं से अलंकृत है और भावप्रधान होने के कारण मानव मन को उत्कर्ष की ओर ले जाता है, इसीलिए संगीत-जगत् में उसने बहुत शीघ्र अपना सम्मानपूर्ण स्थान बना लिया।

यद्यपि आकाशवाणी द्वारा प्रसारित संगीत कार्यक्रम के माध्यम से संगीत का प्रचुर मात्रा में प्रचार हो रहा था तथापि अभी उसमें और सुधार की आवश्यकता को अनुभव किया जा रहा था। इसी को ध्यान में रखकर सन् 1953 ई. में संगीत के अखिल भारतीय शास्त्रीय कार्यक्रम की शुरूआत हुई, जिसके अन्तर्गत प्रत्येक शनिवार और मंगलवार को संगीत सभाओं का आयोजन होता था। इन सभाओं में प्रसिद्ध कलाकारों को सुनवाया जाता था। इसके अतिरिक्त शास्त्रीय संगीत को लोकप्रिय बनाने और उसे सुरक्षित रखने के प्रयासों के अन्तर्गत आकाशवाणी ने सन् 1954 ई. में संगीत सम्मेलन का आयोजन करके एक महत्त्वपूर्ण मोड़ दिया। यह एक सुनहरा अवसर था शास्त्रीय संगीत के श्रोताओं के लिए जिन्हें हिंदुस्तानी और कर्नाटक दोनों पद्धतियों के कलाकारों को सुनने का अवसर मिला। प्रारम्भ के दो वर्षो में संगीत सम्मेलनों को श्रोताओं के समक्ष दो श्रृंखलाओं के रूप में आयोजित किया गया। हिंदुस्तानी संगीत दिल्ली में और कर्नाटक संगीत मद्रास में, लेकिन शिक्षा तथा जनरुचि के अभाव के कारण श्रोताओं का एक बड़ा वर्ग रेडियो सीलोन सुनने लगा। यद्यपि आकाशवाणी के शास्त्रीय संगीत के कार्यक्रम उच्च स्तर के थे तथापि सुगम संगीत और विशेष रूप से फिल्म संगीत प्रेमी श्रोताओं ने सन् 1957 ई. में आकाशवाणी को विविध भारती सेवा आरम्भ करने को विवश कर दिया पर दूसरे केंद्र अपने निर्धारित कार्यक्रम प्रसारित करते रहे आज भी रेडियो से नियमित संगीत के कार्यक्रम प्रसारित होते हैं। **ऑडियो-विजु अल-विधा**

जो चीज सुनी जा सकें, उसे ‘ऑडियो’ और जो देखने से सम्बन्ध रखती हो, उसे ‘विजुअल’ कहते हैं। जब देखना और सुनना एकसाथ हो तो उसे ऑडियो-विजु अल (Audio Visual) कहते हैं। वैज्ञानिक अनुसन्धानों ने ध्वनि के प्रक्षेपण और ग्रहण करने की तकनीक को बहुत विकसित कर लिया है। ध्वनि शास्त्र वाले अध्याय में इसका विशद विवरण है।

कोई भी संगीत आज आकाशवाणाी के माध्यम से हम घर बैठे सुन सकते हैं। इस-सबके पीछे एक बड़ा विज्ञान है, जिसने हमारे लिए इसे सुलभ किया है। जिस प्रकार सर्जरी के क्षेत्र में मनुष्य के अंग-प्रत्यंगों की पूरी जानकारी एवं उनके रोपण-प्रत्यारोपण की विधि विकसित हुई है, उसी प्रकार ध्वनि और प्रकाश के एक-एक आन्दोलन और बिन्दुओं को पकड़कर उनका वैज्ञानिक परिश्कार कर लिया गया है। जब अनेक गायक या वादक अपने संगीत का प्रदर्शन कर रहे हों तो उनकी ध्वनियों को संतुलित करने का काम ऑडियोग्राफी के विशेषज्ञ (त्मबवतकपेज) द्वारा सम्पन्न होता है। वह ध्वनि के गुणों से परिचित होता है और यह भी जानता है कि मनुश्य के कान किसी ध्वनि को किस रूप में सुनना चाहते हैं।

ऑडियो की तरह विजुअल के क्षेत्र में भी यही बातें लागू होती हैं। अन्तर इतना ही है कि ऑडियो में कान और ध्वनि तथा विजुअल में आँख और दृश्य का सम्बन्ध रहता है। किसी भी दृश्य को विद्युत-तरंगों में परिवर्तित करके उसे फिल्म, डिस्क, वीडियो टेप अथवा अन्य किसी चुम्बकीय (मैगनेटिक) उपकरण पर अंकित कर लिया जाता है और उसका पुर्नप्रसारण सम्भव हो जाता है। विजुअल-विधा में दक्ष तकनीशियन, कैमरे के माध्यम से दृश्य-कला को उसके

परिमार्जित एवं मूल रूप में सुरक्षित रख सकता है। रंगों का चुनाव, आकृतियों का संयोजन और प्रकाश का समुचित प्रयोग तकनीशियन की दक्षता पर निर्भर करता है। विस्तार से यह सब इलैक्ट्रॉनिक्स के अन्तर्गत पढ़ाया जाता है।

आज ऑडियो-विजुअल की विधा उत्कृष्ट और उच्चतम रूप में हमारे सामने है, तभी हम ऑडियो और वीडियो का आनन्द ले पाते हैं। घन्टों तक दिखाई देनेवाले दृश्यों को ध्वनि सहित एक छोटी-सी वीडियो-टेप या डिस्क पर रिकार्ड करके शताब्दियों तक सुरक्षित रखा जा सकता है। ऑडियो-विजुअल को यदि मन या हृदय की संज्ञा दी जाये तो कम्प्यूटर-प्रणाली को उनका मस्तिष्क कहा जा सकता है जिसने देखने, सुनने और समझने के अनन्त द्वार खोल दिए हैं। भारतीय संगीत एवं अन्य कलाओं के विकास में ऑडियो-विजुअल का माध्यम नई प्रणाली और नई परंपरा को जन्म देगा, इसमें कोई सन्देह नहीं।

गायका में अब्दुलकरीम खाँ, अमीर खाँ, ओमूकारनाथ ठाकुर, मोघूबाई कुर्डीकर, हीराबाई बड़ौदकर, केसरबाई केरकर, कृष्णराव शंकर पंडित, गंगूबाई हंगल, वाँद खाँ, सिद्धवेश्वरोदेवी, गिरिजादेवी, नारायणराव व्यास, विनायकराव पटवर्धन, डी.वी. पलुस्कर, निसार हुसैन खाँ, बड़े गुलामअली खाँ, चंदन चौबे, बड़े रामदास, महादेव प्रसाद, डागर ब्रदर्श, मुश्ताक हुसैन खाँ, राजाभैया पूछवाले और विलायत-हुसैन खाँ जैसे घरानेदार कलाकारों के जनता ने पहली बार दर्-नि किए और विभिन्न घरानों की विशेषताओं को जाना।

तंत्र वादकों में जनता ने अलाउद्दीन खाँ, हाफ़िज़अली खाँ, अलीअकबर खाँ, विशंकर, विलायतखाँ, अब्दुलहलीम जाफरखाँ, बुन्दूखाँ, रामनारायण, गोपाल मिश्र, हबीर खाँ, बिसमिल्लाह खाँ, पन्नालाल घो-ा, मुश्ताकअली खाँ, राधिकामोहन मोइत्रा, वी.जी. जोग जैसे कलाकारों की कला के दर्शन किए और सरोद, वीणा, सितार, शहनाई तथा वॉयलिन इत्यादि वाद्यों पर भारतीय संगीत का कितना प्रभावशाली प्रदर्शन किया जा सकता है, इसे पहली बार जाना।

ताल-वाद्य के वादकों में गामे खाँ, अहमदजान थिरकवा, कंठेमहाराज, करामत खाँ, किशन महाराज, साम्ताप्रसाद ‘गुदईमहाराज;, अनोखेलाल, चतुरलाल जैसे घरानेदार कलाकारों के जनता ने पहली बार दर्शन किए और विभिन्न घरानों की विशेषताओं को जाना।

निष्कर्ष

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भी आकाशवाणी संगीत श्रोताओं के लिए एक सुदृढ़ माध्यम है। वर्तमान में अनेक एफ.एम. चैनल अस्तित्व में हैं जिनके माध्यम से श्रोतागण संगीत का आनंद उठाते हैं। व्यक्ति यात्रा के दौरान भी एफ.एम. चैनलों के जरिए संगीत का आनंद उठा सकता है। आजकल हर गाड़ी और टैक्सी में एफ.एम. रेडियो लगा हुआ है जिनके अनेक चैनलों पर 24 घंटे संगीत के कार्यक्रमों का प्रसारण लगातार चलता रहता है। व्यक्ति किसी भी समय आकाशवाणी के चैनलों के जरिए संगीत का आनंद ले सकता है। आज भी आकाशवाणी संगीत सुनने का एक सशक्त माध्यम है बावजूद इसके कि टेलीविजन पर अनेकानेक संगीत के कार्यक्रम प्रसारित किए जाते हैं, मोबाईल पर अनेक ऐप्स के द्वारा संगीत सुनने का आप्शन उपलब्ध है परन्तु ऐसे में भी आकाशवाणी एवं एफ.एम. रेडियो के माध्यम से संगीत सुनने वालों की संख्या भी कम नहीं है। संचार माध्यमों में आधुनिक क्रांति के बावजूद आकाशवाणी संगीत के क्षेत्र में अपनी पकड़ बनाये हुए है।

संदर्भ ग्रथं सूची-

आकाशवाणी और हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत- डा.सुची स्मिता
आकाशवाणी संगीत -श्रीनिवासा अययर
आकाशवाणी संगीत- पंडित कुमार गंर्धव
डॉ. हरद्वारी लाल शर्माः कला में संगीत साहित्य और उदात्त के तत्व, मेरठ (1994), पृ. 5
भारतीय संगीत वैज्ञानिक विश्लेषण. डा0 स्वतन्त्र :र्मा
श्रीमद भगवत गीता - प्र. गीता प्रेस, गोरखपुर - शवौ संस्करण
संगीत शास्त्र - के. बासुदेव शास्त्री